अक्टूबर2024
मूल्य : 10.00 रुपये

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532
मासिक जागरण पत्रिका

आदिशक्ति मां दुर्गा आराधना, सिद्धि के पावन पर्व नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं।
मां भगवती सम्पूर्ण मानव समाज का कल्याण करें,विश्व को सत मार्ग की शक्ति प्रदान करें।

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पम्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

HIGH PERFORMANCE CHIP | MULTIPLE PROTECTION | AUTOMATIC RECOGNITION | LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL | PWN CHARGE | SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 अक्टूबर 2024 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 04 अंक : 05
•••
आश्विन शुक्ल -3
युगाब्द ५१२६

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
राकेश दांगी
राजेश सोनी
•••
मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341
•••
Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी - विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरुण सपकाले फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

मातृदेवो भव कहकर माँ को नमन किया गया है। नवरात्रि पर्व में जो मातृशक्ति की साधना, उपासना और आराधना हम करते हैं वह माँ का अपनी संतान के प्रति स्नेह, समर्पण, त्याग एवं तपस्या का ही परिणाम है। पिता की अपेक्षा संतान के लिये माँ का महत्व अधिक है। पिता उसके जन्म का एक कारक तत्व या जनक अवश्य होता है परन्तु माँ जिस प्रकार बच्चे को अपने गर्भ में स्थान देकर उसे अपने प्राणों से सींचकर एवं दूध से पालकर परिश्रम पूर्वक अपना खून-पसीना बहाकर उसका रक्षण और पालन-पोषण करती है, वह अतुलनीय है। माँ की ममता की तुलना अन्य किसी व्यक्ति व कार्य से करना असंभव है।

माँ शब्द ही इतना चमत्कारी व प्रभावपूर्ण तथा दिव्य है कि उसका प्रयोग हर विशिष्ट व्यक्तित्व के साथ किया जाता है। जैसे आत्मा, परमात्मा, जीवात्मा, महात्मा, धर्मात्मा इत्यादि।

माँ शब्द के अन्तर्गत केवल जन्म देने वाली माँ ही नहीं आती बल्कि वे तमाम तत्व भी आते हैं जो माँ की तरह हमारा पालन-पोषण व रक्षण करते हैं और जिन पर हमारा जीवन आश्रित है। अतः वे सभी तत्व हमारे लिए पूजनीय है। उनकी पूजा और सेवा करना हमारा परम एवं पुनीत कर्तव्य है। उसका निर्वहन करके ही हम उनके प्रति अपने ऋणों और उपकारों से उऋण होकर बड़भागी व कृत-कृत्य हो सकते हैं।

मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम ने इसीलिए रावण का संहार कर लंका विजय के पश्चात सोने की लंका के प्रलोभन को यह कहकर ठुकरा दिया था। **''अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।''** हम श्रीराम के अनुयायी होकर अपनी जन्मभूमि धरती माता के प्रति श्रद्धा और समर्पण का भाव रखकर कुछ अच्छा करने की प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं। माँ के दूध की लाज रखना व एक सच्चे और अच्छे सपूत सिद्ध होना ही प्रत्येक संतान का परमधर्म है। वह माता भी धन्य है जिसकी संतान रामभक्त (राष्ट्रभक्त) हो।

राष्ट्रधर्म के अनुयायी हम, फूल मिले या शूल मिले।
नहीं चाहिये सोने की लंका, अवधपुरी की धूल मिले।।

नारी का सम्मान भी, माता की आराधना

अनव रघुवंशी

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता

कहते है जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवताओं का वास होता है और भारतवर्ष ऐसी भूमि है, जहाँ माँ दुर्गा, माँ काली, माँ सरस्वती का प्राकट्य हुआ है। हर वर्ष दो बार नवरात्रि का त्यौहार मनाकर माँ की आराधना की जाती है। परंतु हाल ही में महिलाओं के प्रति बढ़ते अनैतिक और अभद्र व्यवहार की घटनाएँ अखबारों की मुख्य सुर्खियों में हैं। घर में देवा की स्थापना करने वाले और नवरात्र मनाने वाले समाज के लिये विचारणीय है कि देश में उनकी माँ, उनकी बेटी, उनकी बहू की अस्मिता खतरे में है।

मैथिली, गार्गी, यशोधरा की वो देवभूमि, जहाँ देवर लक्ष्मण अपनी भाभी के आभूषण नहीं पहचान पाते हैं-

नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले।
नूपुरेत्वभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्।

अर्थात् नारी सम्मान, जहाँ की संस्कृति है, हाड़ी रानी, रानी पद्मिनी, माँ जीजाबाई जैसी कई वीरांगनाओं की धरती **शेरोंवाली भारत माँ** की भूमि है, जहाँ आज शिक्षित व विकासशील समाज में महिला डॉक्टर के साथ दुष्कर्म और हत्या कर दी जाती है और फिर **अपराजिता, शक्ति, दिशा** जैसे अधिनियमों से नारी सुरक्षा का दावा किया जाता है।

नवरात्रि में माँ की आराधना हल्दी-कुंकुम से करना सार्थक तभी है, जब प्रत्येक व्यक्ति समझे कि असली पूजा नारियों का सम्मान करने में है। नारी सहनशीलता की, बुद्धिमत्ता की, कार्य कुशलता की, करुणा की प्रतिमूर्ति है। वे हर काम का अच्छा संतुलन और सामंजस्य बनाकर करने में निपुण हैं। जैसे एक वर्किंग मेल का कार्य ऑफिस से निकलते ही खत्म हो जाता है, वहीं वर्किंग वुमेन अपने काम में बैलेंस के साथ-साथ घर की देखभाल, अपने बच्चों पर ध्यान, घर में बुजुर्गों की सेवा आदि में कोई लापरवाही नहीं करती। माँ दुर्गा के नौ रूप भी इसी संतुलन का आह्वान करते हैं।

❖ जैसे माँ दुर्गा का रूप बताता है कि कैसे पुरुष और महिलाओं के गुणों में संतुलन बनाकर रखना चाहिए।

❖ माँ कालरात्रि उग्रता और साहस सिखाती है।

❖ माँ शैलपुत्री अच्छी सेहत, ब्रह्मचारिणी ब्रह्मचर्य का मतलब व स्वच्छता और निकृष्ट कार्यों से बचना बताती है, महागौरी के रूप से विवेक की सीख मिलती है आदि।

कल्याण हेतु नारी शक्ति की परम आवश्यकता - जन्म और मोक्ष को संभव बनाने के लिए एक नारी, एक शक्ति की परमावश्यकता है। विश्वजननी मूल प्रकृति ईश्वर ही नौ देवी रूप में प्रकट हुई हैं। पराशक्ति की इच्छा ही सृष्टि का कारण है। जन्म के लिए माँ की कोख है, तो पालन-पोषण के लिए धरती माँ की गोद है और मुक्ति यानि अस्थि विसर्जन के लिए मोक्षदायिनी माँ गंगा है। आज प्रत्येक महिला को और भी ज्यादा सशक्त होने की आवश्यकता है।

यह जिम्मेदारी पूरे समाज की है। पर्दाप्रथा और घूंघट को पीछे छोड़ समाज बहुत आगे बढ़ चुका है। को छोड़ कदम से कदम मिलाने में सहयोग देने के लिए प्रोत्साहित करें। जब हम महिलाओं के लिए बेहतर भविष्य के निर्माण की बात कर रहे हैं, तो इन सबकों पर विचार करने और महिलाओं की व्यक्तिगत पहचान का उत्सव मनाने का समय आ गया है। जो महिलाएं खुद को शक्तिहीन महसूस करती हैं, उन्हें ज्ञान और शक्ति के साथ खुद को तैयार करना चाहिए और अपने लिए खड़े होने के लिए अपने अधिकारों (हथियारों) पर विचार करना चाहिए। नवरात्रि जैसे त्यौहार केवल वर्ष में दो बार न मनाएँ बल्कि नारियों का सम्मान, आदर, उनकी अस्मिता की रक्षा जैसे गुण अपने व्यक्तित्व में उतार लें तभी इस त्यौहार का मूल प्रभाव दिखेगा वरना ये पूजा-पाठ केवल आडंबर और दिखावा सिद्ध होगा।

नवरात्र : पूजा, प्रकृति और परंपरा

हमारी सनातन संस्कृति की विशिष्टता है कि हमारे यहां प्रकृति से जुड़े पर्व हैं तो जीव से जुड़े पर्व भी हैं। प्रकृति माया है तो जीव ब्रह्म। दोनों के समन्वय से सृष्टि का अस्तित्व है। प्रकृति के हर तत्व पूज्यनीय हैं चाहे वे व्यक्त हों या अव्यक्त। हर वनस्पति हर वनस्पति में ईश्वर का वास है। नवरात्र के नौ दिनों में मा के नौ रूपों की आराधना होती है। मां के प्रत्येक स्वरूप का एक पौधे में वास माना गया है। वह पौधा मानव सभ्यता के विभिन्न विकारों, दुखों का शमन करने में सहायक है। इन पौधों में मां का वास माने जाने से इन पौधों को पवित्र माना गया है और उस पौधे के औषधीय गुण मां के स्वरूप के सादृश्य हैं। इसी प्रकार, मां के प्रत्येक स्वरूप को भिन्न पुष्प प्रिय हैं। मां के स्वरूप के प्रिय पुष्प अर्पित करने से शुभफल की प्राप्ति होती है। इसका अर्थ हुआ कि नवरात्र में न केवल मां की आराधना होती है अपितु मां की आराधना के माध्यम से 18 प्रकार के औषधीय एवं पुष्पीय पौधों का संरक्षण भी किया जाता है जिससे मानव सेयता के स्वास्थ्य की आवश्यकताएं पूर्ण होती हैं।

मां शैलपुत्री वन्दे वांछितलाभाय, चंद्रार्धकृतशेखराम्।
वृषारूढां शूलधरां, शैलपुत्रीं यशस्विनीम् ॥

पुष्प - लाल गुड़हल

मां ब्रह्मचारिणी - **दधाना करपद्माभ्याम्, अक्षमालाकमण्डलू।**
देवी प्रसीदतु मयि, ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा।।

पुष्प - गुलदाउदी **मान्यता** - यह पुष्प अर्पित करने से घर में सुख-समृद्धि व खुशहाली का वास

मां चंद्रघंटा - **पिंडजप्रवरारूढा, चंडकोपास्त्रकैयुर्ता।**
प्रसादं तनुते मह्यं, चंद्रघंटेति विश्रुता।।

पुष्प - कमल या शंखपुष्पी - **मान्यता**- यह पुष्प अर्पित करने से जीवन में सफलता के रास्ते खुलते हैं

मां कूष्मांडा सुरासंपूर्णकलशं, रुधिराप्लुतमेव च।
दधाना हस्तपद्माभ्यां, कूष्मांडा शुभदास्तु मे।।

पुष्प - चमेली - **मान्यता** - यह पुष्प अर्पित करने से अच्छे स्वास्थ्य का आशीर्वाद मिलता है

मां स्कंदमाता - **सिंहासनगता नित्यं, पद्माश्रितकरद्वया।**
शुभदास्तु सदा देवी, स्कंदमाता यशस्विनी।।

पुष्प -पीला गुलाब - **मान्यता** - पीले फूल अर्पित करने से सुख-संपन्नता का आशीर्वाद मिलता है

मां कात्यायनी - **चंद्रहासोज्ज्वलकरा, शार्दूलवरवाहना।**
कात्यायनी शुभं दद्यात्, देवी दानवघातनी।।

पुष्प - पीला गेंदा -मान्यता -यह पुष्प अर्पित करने से मां का आशीर्वाद मिलता है

मां कालरात्रि -**एकवेणी जपाकर्ण, पूरा नग्ना खरास्थिता।**
लम्बोष्ठी कर्णिकाकर्णी, तैलाभ्यक्तशरीरिणी।
वामपादोल्लसल्लोह, लताकंटकभूषणा।
वर्धनमूर्धध्वजा कृष्णा, कालरात्रिभयंकरी।।

पुष्प - नीला कृष्णकमल - **मान्यता** - यह पुष्प अर्पित करने से देवी मां की कृपा प्राप्त होती है

मां महागौरी - **श्वेते वृषे समारूढ़ा, श्वेताम्बरधरा शुचिः।**
महागौरी शुभं दद्यात, महादेवप्रमोददाद।।

पुष्प - मोगरा **मान्यता** - यह पुष्प अर्पित करने से घर-परिवार पर मां की कृपा होती है

मां सिद्धिदात्री - **सिद्धगंधर्वयक्षाद्यैः, असुरैरमरैरपि।**
सेव्यमाना सदा भूयात, सिद्धिदा सिद्धिदायिनी।।

पुष्प - चम्पा **मान्यता** - यह पुष्प अर्पित करने से मां अति प्रसन्न होती हैं

(पांचजन्य से साभार)

नर्मदा – एक पुण्यस्मरण

पद्मनाभ तिवारी

जबलपुर बहुत बड़ा शहर नहीं है। एक समय नागपुर और जबलपुर जुड़वाँ शहर कहे जाते थे। समय के साथ नागपुर महानगर हो गया, जबलपुर का उतना विकास नहीं हो पाया। इसकी पीड़ा जबलपुर-वासियों के मन में है। लेकिन विकास की इस दौड़ में पीछे छूट जाने के कुछ लाभ भी हुए। कुछ ऐसी चीजें बच गई जो विकास की दौड़ में प्रायः खो जाती हैं। इन्हीं में से हैं **नर्मदा**, और नर्मदा के प्रति जबलपुर वासियों का मातृवत् प्रेम।

यदि आपका जबलपुर रहना होगा तो नर्मदा आपको खींचेगी ही। ऐसा ही कुछ मेरे साथ हुआ। दिसम्बर 2003 में आयकर अधिकारी के रुप में मेरी पदस्थापना जबलपुर में हुई। कुछ समय बाद ग्वारीघाट जाना हुआ। ग्वारीघाट जबलपुर में नर्मदा का सबसे लोकमान्य घाट है। शुरू में नर्मदा जाना एक साधारण अनुभव ही था। बहता हुआ पानी, यहाँ-वहाँ बिखरे और सड़ते हुए फूल, निर्माल्य व पूजन सामग्री, गायें, कुत्ते, अर्द्ध-शहरी लोग, यहाँ-वहाँ स्थापित विभिन्न देवी-देवता एवं उनके पास जलती अगरबत्तियाँ, पूजन-सामग्री और नाश्ते की टपरेनुमा दुकानें, और कई प्रकार की नालियों का सीधे नर्मदा में मिलना। मन क्षुब्ध हो उठा, हम अपने तीर्थों की ऐसी दशा करके क्यों रखते हैं।

फिर नर्मदा के पास जाना प्रायः होने लगा। ग्वारीघाट में सीढ़ियाँ थीं। शारीरिक विकलांगता-वश मेरा वहाँ जाना कठिन था। इसका भी उपाय मिल गया। ग्वारीघाट के दायीं तरफ एक ऊबड़-खाबड़ ढलान थी, जिससे मेरी वैन सीधे नर्मदा तक जाती थी। यहाँ बैठने के लिए कुछ चबूतरे थे। इसी प्रकार, ग्वारीघाट के बायीं तरफ एक कंक्रीट की ढलान थी, जिसके अंत में नावें बँधी रहती थीं। यहाँ भी मेरी वैन एकदम नर्मदा तक जाती थी। यहाँ लकड़ी के अनेक तखत लगे होते थे पुरोहितों के अपने-अपने। अनुरोध करने पर वे बैठने की अनुमति दे देते थे। इन दोनों घाटों पर अधिक भीड़ भी नहीं होती थी। प्रभु-प्रदत्त इन सुविधाओं के कारण नर्मदा के पास जाना बढ़ने लगा।

धीरे-धीरे समझ आने लगा कि यह सिर्फ बहता हुआ पानी नहीं है। जैसा कि सुन्दरलाल बहुगुणा ने कहा है- **नदी पानी की बहती हुई धार मात्र नहीं है।** मई 2011 तक के मेरे जबलपुर वास ने यह भी अनुभव करा दिया कि नर्मदा सिर्फ नदी नहीं है, यह माई है। ग्रीष्म में, शीत में, वर्षा में सालों-साल माँ के दर्शन, जल के स्पर्श ने सभी भ्रम दूर कर दिये। तमाम अव्यवस्थाओं के बीच नर्मदा की दिव्यता और अलौकिक सौन्दर्य की अनुभूति हुई। उस समय आयकर

आयुक्त श्री एस. के. चट्टोपाध्याय थे और मैं उन्हीं के अधीन पदस्थ था। चट्टोपाध्याय साहब अंग्रेंजी व बाँग्ला साहित्य तथा धर्म में अच्छा दखल रखते थे। अंग्रेंजी में कवितायें भी लिखते थे। समान रुचि होने के कारण मेरे उनसे मित्रवत् संबन्ध हो गए। संभवतः 2008 में कभी की बात रही होगी, एक दिन चट्टोपाध्याय साहब बोले - **तिवारी, अमृतलाल वेगड़ जी को जानते हो?**

नहीं सर।

अरे! उन्होंने नर्मदा-परिक्रमा पर एक किताब लिखी है। काफी प्रसिद्ध है। खैर! उनकी पुस्तक के बाँग्ला संस्करण का कल मुझे विमोचन करना है, उनके घर पर। तुम्हें भी मेरे साथ चलना है।

जी सर। अनिच्छा से मैंने हामी भर दी।

अगले दिन हम और कुछ अन्य अधिकारी वेगड़ जी के घर पर पहुँचे। सुरुचिपूर्ण बँगला था, जिसके बगीचे में वह कार्यक्रम था। सीमित संख्या में अन्य आमंत्रित लोग भी थे। कार्यक्रम शुरू हुआ और कुछ लोगों ने उद्बोधन दिए। उनमें से एक थे डॉ. अखिलेश गुमाश्ता। भारतीय परम्परा में नदियों का माहात्म्य बताते हुए उन्होंने रामचरितमानस की एक चौपाई कही-

दरस परस मज्जनु अरु पाना।
हरइ पाप कह बेद पुराना।।

रामचरितमानस के प्रति ग्रहणशील मेरे मन में यह सुनते ही वेगड़ जी और डॉ. अखिलेश गुमाश्ता के प्रति उत्सुकता उत्पन्न हो गई।

थोड़ा विषयान्तर। डॉ. अखिलेश गुमाश्ता अस्थिरोग विशेषज्ञ हैं। उन्होंने रामचरिमानस का अंग्रेजी में अनुवाद किया है, और वह भी पद्यानुवाद। सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि जो छंद जिस मीटर का है, अंग्रेजी अनुवाद भी उसी मीटर का है। चौपाई, दोहा, सोरठा आदि सभी के अनुवाद में इस विशेषता को निबाहा गया है।

अब मुझे ठीक-ठीक याद नहीं कि उसी कार्यक्रम के अंत में मुझे वेगड़ जी की पुस्तक **सौंदर्य की नदी नर्मदा** मिली या कुछ दिन बाद मिली, लेकिन जल्दी ही मैं वह पुस्तक पढ़ रहा था। पुस्तक पढ़ते-पढ़ते मैं भी नर्मदा की यात्रा कर रहा था और लेखक के प्रति श्रद्धाभाव से (और ईर्ष्याभाव से भी) भरता जा रहा था। रामचरितमानस के बाद इतनी **भारतीय** रचना मैंने पहली बार पढ़ी थी।

अमृतलाल वेगड़ जी ने 49 वर्ष की अवस्था में 1977 से परिक्रमा आरंभ की और 71 वर्ष की आयु पूर्ण करने तक वे नर्मदा व उसकी सहायक नदियों की 4,000 किलोमीटर से अधिक की पैदल परिक्रमा पूर्ण कर चुके थे। शीघ्र ही, वेगड़ जी से मुलाकातें होने लगीं। कई बार उनके यहाँ गया। एकाध बार शायद वे भी आये। कितनी बार तो वे अपने घर के बाहर टहलते हुए इंतजार करते मिले। कैसी सहजता, सादगी!

वेगड़ जी के घर मेहमान आते रहते थे। एक बार वहाँ एक ब्रिटिश महिला मिलीं **मैरिएटा मैड्रेल, भारतीय नाम मीरा**। बहुत अच्छी हिन्दी बोल रही थीं। उन्होंने स्वयं भी नर्मदा-परिक्रमा की है और **सौंदर्य की नदी नर्मदा** का अंग्रेजी अनुवाद किया है।

एक बार वहाँ दो जर्मन युवक मिले। पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद पढ़कर वे नर्मदा-परिक्रमा के लिये आए हुए थे। उन्हें हिन्दी नहीं आती थी। बड़े आत्मीय-भाव से वे वेगड़ जी के यहाँ ठहरे हुए थे। उनके पास समय कम था, क्रिसमस की छुट्टियों में आए थे, इसलिये उनकी खंड-परिक्रमा की योजना थी।

वेगड़ जी ने नर्मदा और उसकी सहायक नदियों की परिक्रमा उस समय कर ली, जब वे अपने मूल स्वरूप में विद्यमान थीं। बाद में उन पर अनेक छोटे-बड़े बाँध बन गए और वह मूल स्वरूप बहुत हद तक लुप्त हो गया। कई सुन्दर, प्राकृतिक व धार्मिक स्थान डूब में आ गए। बड़ी-बड़ी कृत्रिम झीलें बन गयीं, जिन्होंने **तीरे-तीरे नर्मदा** की यात्रा को अतीत की बात बना दिया। संभवतः यह भी कोई दैवीय कार्य-योजना थी जिसने मूल स्वरूप लुप्त होने के पहले उसे पुस्तक स्वरूप में संरक्षित कर दिया।

लोकोत्सव गाज-बीज

नंदकिशोर प्रजापति

डोल-ग्यारस के अगले दिन बारस और तेरस पर मालवा-निमाड़ के कुछ अंचलों में सुबह से ही घर की महिलायें छत पर मिट्टी के भील-भीलनी , उनके बच्चे, घट्टी, चुल्हा, बर्तन आदि बनाती है। इन पर गाज-बीज के धागे चढ़ाये जाते है और प्रसाद के रूप में गजाकड़ा व खीर बनायी जाती है।

यहाँ गाज-बीज से आशय बरसात में चमकने वाली बिजली से है। गाज यानी गर्जना और बीज का आशय बिजली से होता है।

धन्य हैं हमारी परंपरा जिसमें गरजने-चमकने वाली बिजली को भी पूजा जाता हैं, ताकि वनों में निवास करने वाले हमारे बंधु इनसे बचे रहे।

इस अवसर पर घर में जितने सदस्य होते है, उनके अलग-अलग गजाकड़े बनते है, साथ ही गाय और कुत्ते के लिए भी गजकड़ा बनाया जाता हैं।

आज से कुछ वर्ष पूर्व घर में गजाकड़े काफी बड़े बनते थे, अब तो छोटे-छोटे बनाते हैं। वैसे भी गजाकड़े का आशय गज जैसी रोटियों से लगाया जाता हैं।

गजाकड़े का भोग लगाने के बाद अपने-अपने गजाकड़े ही प्रसाद के रूप में लिये जाते है। बारस की पूजा घर की महिलाएँ ही करती हैं, तेरस को यह पर्व बड़े स्तर पर मनाया जाता है। पर कुछ घरों पर ओटन की वजह से आज बारस को भी मनता हैं।

जय हो गाज-बीज माता की..।।

जय हो भील-भीलनी के परिवार की ।।

नेतृत्व और न्याय का एक शक्तिशाली समन्वय

अरुंधती सिंह चंदेल

देवी अहिल्याबाई होल्कर भारतीय इतिहास की एक अद्वितीय शासिका थीं, जिन्होंने अपने शासनकाल में कुशल सैन्य और प्रशासनिक प्रणालियों का निर्माण किया। उनका नेतृत्व और शासनकाल न केवल भारतीय समाज में बल्कि बाहरी विद्वानों और इतिहासकारों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत रहा है। अहिल्याबाई का शासनकाल उस समय के अधिकांश भारतीय राज्यों की तुलना में अधिक संगठित, न्यायप्रिय और लोकहितकारी था। उनके द्वारा स्थापित सैन्य और प्रशासनिक प्रणालियां आज भी आदर्श मानी जाती हैं। इस लेख में उनकी सैन्य प्रशासन प्रणाली, उसमें किए गए सुधार, महिलाओं के लिए उनके दृष्टिकोण, और बाहरी लोगों द्वारा उनके शासन की प्रशंसा का विश्लेषण किया गया है।

सैन्य प्रशासन प्रणाली की विशेषताएँ

अहिल्याबाई होल्कर की सैन्य प्रशासन प्रणाली अत्यधिक संगठित और अनुशासित थी। उन्होंने अपने राज्य की सुरक्षा के लिए एक शक्तिशाली सेना का गठन किया, जिसमें घुड़सवार, पैदल सैनिक और तोपखाने की इकाइयां शामिल थीं।

उनकी सेना मराठा साम्राज्य की परंपरागत युद्धकला से प्रेरित थी, लेकिन अहिल्याबाई ने इसमें अपनी विशेषताएं जोड़ीं। उनकी सेना का मुख्य उद्देश्य राज्य की सीमाओं की रक्षा करना और आंतरिक शांति बनाए रखना था।

अहिल्याबाई ने सरदारों और जागीरदारों के साथ मजबूत संबंध बनाए और उन्हें सैन्य प्रशासन में महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया। यह नीति शिवाजी महाराज की सैन्य प्रशासन प्रणाली से प्रेरित थी, जहाँ स्थानीय सरदारों को प्रशासनिक और सैन्य उत्तरदायित्व सौंपा जाता था। शिवाजी महाराज की तरह, अहिल्याबाई ने भी अपने सैन्य बल को केवल युद्ध विजय के लिए नहीं, बल्कि प्रजा की सुरक्षा और राज्य की स्थिरता के लिए इस्तेमाल किया। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि राज्य के भीतर किसी भी प्रकार की विद्रोही गतिविधियों या बाहरी आक्रमणों का प्रभावी ढंग से मुकाबला किया जा सके। उनकी सेना न केवल मजबूत थी, बल्कि राज्य की आर्थिक स्थिति पर अत्यधिक बोझ भी नहीं डालती थी, जो कि उनके कुशल आर्थिक प्रबन्धन का प्रमाण है।

प्रशासनिक सुधार और न्यायिक प्रणाली

अहिल्याबाई का प्रशासनिक ढांचा अत्यधिक संगठित और सुचारु था। उन्होंने अपने शासन में न्याय और पारदर्शिता पर विशेष ध्यान दिया। उनकी न्यायिक प्रणाली निष्पक्ष और त्वरित थी, जिसमें जनता को न्याय मिलने में विलंब नहीं होता था। उनके शासन में भ्रष्टाचार और अनियमितताओं को सहन नहीं किया जाता था, और जो अधिकारी अपनी जिम्मेदारियों को सही ढंग से नहीं निभाते थे, उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाती थी। अहिल्याबाई ने कर संग्रहण प्रणाली में सुधार किए और यह सुनिश्चित किया कि कर का बोझ जनता पर अनावश्यक रूप से न पड़े। उनका प्रशासनिक दृष्टिकोण राज्य की आर्थिक समृद्धि और जनता के कल्याण पर आधारित था। उन्होंने राजस्व का उचित वितरण सुनिश्चित किया, जिससे राज्य की सेना और प्रशासनिक तंत्र को मजबूत रखा जा सके और साथ ही साथ सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों को भी चलाया जा सके। उनकी शासन प्रणाली में अधिकारियों और कर्मचारियों की जवाबदेही सुनिश्चित की गई थी। उन्होंने अपने राज्य के विभिन्न हिस्सों

में सक्षम प्रशासकों की नियुक्ति की, जो स्थानीय समस्याओं का समाधान कर सकें और राज्य में शांति और स्थिरता बनाए रख सकें। उनकी प्रशासनिक नीतियों ने न केवल राज्य के आंतरिक प्रबंधन को संगठित रखा, बल्कि जनता के साथ एक गहरा संबंध भी स्थापित किया। अहिल्याबाई होल्कर का शासनकाल महिलाओं के उत्थान और उनके अधिकारों के संरक्षण के लिए विख्यात था। उन्होंने अपने शासन में महिलाओं की सुरक्षा और समानता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। उनके द्वारा उठाए गए कई कदम नारी सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण थे। उनके शासन में विधवाओं को समाज में नया स्थान मिला और बाल-विवाह जैसी कुप्रथाओं के खिलाफ कठोर कदम उठाए गए। अहिल्याबाई ने स्त्रियों को उच्च प्रशासनिक पदों पर भी नियुक्त किया। उन्होंने सुनिश्चित किया कि महिलाओं को समाज में सम्मानजनक स्थिति प्राप्त हो और उन्हें सुरक्षा का वातावरण मिले। उनके शासन में महिलाओं को उनके अधिकारों की रक्षा के लिए कानूनी सहायता भी उपलब्ध कराई गई। उनका दृष्टिकोण यह था कि एक समाज तभी समृद्ध हो सकता है जब उसकी महिलाएँ सुरक्षित, सशक्त और सम्मानित हों।

अहिल्याबाई के शासन में स्त्रियों के प्रति किए गए सुधार उस समय के अन्य शासकों के मुकाबले काफी अग्रगामी थे। उन्होंने न केवल महिलाओं की सामाजिक स्थिति को बेहतर बनाया, बल्कि उनके आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों को भी संरक्षित किया। उनकी नीतियाँ महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और समाज में उनकी स्थिति को सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। अहिल्याबाई होल्कर के सैन्य और प्रशासनिक तंत्र की तुलना शिवाजी महाराज की प्रणाली से की जा सकती है। शिवाजी महाराज का शासन कुशल सैन्य रणनीति, अनुशासित प्रशासन और प्रजा की सुरक्षा के प्रति गहरे समर्पण के लिए विख्यात था। अहिल्याबाई ने अपने शासन में इन सिद्धान्तों को अपनाया और उन्हें अपने राज्य की आवश्यकताओं के अनुरूप ढाला।

शिवाजी महाराज की तरह, अहिल्याबाई ने भी अपने राज्य की सेना को अनुशासित और संगठित रखा। उनकी सेना में स्थानीय सरदारों और जागीरदारों की महत्वपूर्ण भूमिका थी, जो शिवाजी की **स्वराज्य** की नीति से मेल खाती है।

इसके अलावा, शिवाजी महाराज की तरह, अहिल्याबाई ने भी अपने राज्य में कर प्रणाली को पारदर्शी और न्यायसंगत रखा। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि राज्य के संसाधनों का उपयोग जनता के कल्याण के लिए हो। शिवाजी महाराज की प्रेरणा से, अहिल्याबाई ने अपने राज्य की प्रजा के साथ गहरे संबंध स्थापित किए और सुनिश्चित किया कि उनकी नीतियाँ प्रजा के हित में हों। दोनों शासकों की शासन प्रणाली का मूल उद्देश्य समाज की रक्षा, आर्थिक समृद्धि और प्रजा के कल्याण को सुनिश्चित करना था।

बाहरी लोगों द्वारा प्रशंसा

देवी अहिल्याबाई होल्कर के शासनकाल की प्रशंसा न केवल भारतीय विद्वानों ने की, बल्कि कई विदेशी इतिहासकारों, ब्रिटिश अधिकारियों और यात्रियों ने भी उनके शासन की प्रशंसा की। उनकी न्यायप्रियता, लोकहितकारी नीतियाँ और धार्मिक सहिष्णुता ने विदेशी पर्यवेक्षकों का ध्यान आकर्षित किया।

जॉन मैल्कम, एक ब्रिटिश अधिकारी और इतिहासकार ने अहिल्याबाई के शासन की प्रशंसा करते हुए उन्हें **भारत में सबसे अच्छे शासकों में से एक** कहा। उन्होंने उनकी कर प्रणाली, न्यायप्रियता और सैन्य प्रशासन की कुशलता का विशेष उल्लेख किया। मैल्कम ने लिखा कि अहिल्याबाई के राज्य में न केवल सेना अनुशासित थी, बल्कि प्रजा भी उनके प्रति अत्यधिक सेमान और विश्वास रखती थी।

इसी प्रकार, फॉर्ब्स, एक अन्य ब्रिटिश अधिकारी, ने भी अहिल्याबाई के शासन की लोकहितकारी नीतियों की प्रशंसा की। उन्होंने लिखा कि अहिल्याबाई ने अपने शासन में गरीबों, किसानों और स्त्रियों के लिए कई कल्याणकारी नीतियाँ लागू कीं, जिससे राज्य की समृद्धि और स्थिरता बनी रही। विदेशी यात्रियों ने भी अहिल्याबाई के न्यायप्रिय शासन और धार्मिक सहिष्णुता की प्रशंसा की। रॉबर्ट ओर्मे, एक ब्रिटिश इतिहासकार ने लिखा कि अहिल्याबाई ने अपने शासनकाल में धार्मिक स्थलों का निर्माण और पुनर्निर्माण करके धार्मिक एकता को बढ़ावा दिया। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि अहिल्याबाई ने विभिन्न धर्मों के लोगों के साथ समान व्यवहार किया और उनके धार्मिक अधिकारों का सम्मान किया।

निष्कर्ष

देवी अहिल्याबाई होल्कर का शासनकाल भारतीय इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय है। उनके सैन्य और प्रशासनिक सुधार, स्त्रियों के अधिकारों के प्रति उनकी संवेदनशीलता और बाहरी पर्यवेक्षकों द्वारा उनकी प्रशंसा, सभी उनके कुशल और न्यायप्रिय शासन के प्रमाण हैं। उनका शासन न केवल शक्ति और अनुशासन का प्रतीक था, बल्कि समाज में न्याय, समानता और धार्मिक सहिष्णुता का भी आदर्श उदाहरण था। बाहरी विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा की गई उनकी प्रशंसा इस बात का प्रमाण है कि देवी अहिल्याबाई का शासन न केवल भारतीय समाज में, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी एक प्रेरणास्रोत था। उनकी शासन प्रणाली आज भी भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था के लिए एक आदर्श मानी जाती है, जहाँ शक्ति, सेवा और समर्पण का अद्वितीय संगम देखने को मिलता है।

सनातन विजय पर्व - विजयादशमी

डॉ. सुब्रतो गुहा

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।

भारत के सनातन हिन्दू समाज की मान्यता है कि अनादिकाल से ही विजयादशमी महापर्व विजय का प्रतीक है - धर्म की अधर्म पर, न्याय की अन्याय पर, सत्य की असत्य पर, सदाचार की दुराचार पर, दैवीय शक्तियों की आसुरी शक्तियों पर। विजयादशमी महापर्व में अनेक संयोग समाहित हैं। सतयुग में इसी दिन देवी दुर्गा ने महिषासुर का वध किया था। त्रेता युग में प्रभु श्रीराम ने दशानन रावण का वध किया था। द्वापर युग में बारह वर्ष के वनवास तथा एक वर्ष के अज्ञातवास के उपरान्त पांडवों ने इसी दिन शस्त्रों का पूजन कर शस्त्र धारण किया था। कलयुग में इसी दिन हिन्दू पद पादशाही के संस्थापक छत्रपति शिवाजी ने सीमोल्लंघन की परंपरा प्रारंभ की थी ताकि हिन्दू राज्य का निरन्तर प्रभाव बढ़ता रहे। इन्हीं सुखद संयोगों में एक और सुखद संयोग यह है कि 27 सितंबर सन् 1925 को नागपुर के मोहिते बाड़े में विजयादशमी के दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना आद्य सरसंघचालक प.पू. डॉ. हेडगेवार द्वारा की गई थी। मुख्य उद्देश्य था नौ सौ वर्षों के विदेशी शासन के फलस्वरूप ग्लानि के भाव से ग्रसित हिन्दू नर-नारियों के मन में अपने स्वर्णिम अतीत तथा सनातन धर्म-संस्कृति के प्रति गर्व का भाव संचारित करना एवं हिन्दू समाज के बिखरे हुए तत्वों को एकसूत्र में पिरोकर एक सशक्त हिन्दू समाज का निर्माण करना। विजयादशमी संघ की स्थापना तिथि भी है जो निरन्तर विजय पथ पर बढ़ते रहने की दृढ़ इच्छाशक्ति को भी रेखांकित करती है। जातिगत ऊँच-नीच के भाव से ऊपर उठकर एक समरस सशक्त हिन्दू समाज ही सशक्त स्वाभिमानी भारतवर्ष की आधारशिला बन सकता है। हिन्दू समाज स्व की अवधारणा से ही बलशाली हो सकता है - स्वभाषा, स्वभूषा, स्वराज्य, स्वधर्म, स्वदेशी और स्वाभिमान।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की वर्षगांठ - विजयादशमी - पर प्रतिवर्ष पथ संचलन निकलता है - इसमें जब सैकड़ों - हजारों स्वयंसेवक संघ गणवेश में लयबद्ध कदमताल करते हुए शहरों-गाँवों-कस्बों की गलियों से गुजरते हैं - तब हिन्दूद्रोहियों एवं दुर्जनों की रूह काँपती है और सज्जनशक्ति का मनोबल बढ़ता है - क्योंकि **संघे शक्ति कलयुगे** अर्थात् कलयुग में संगठित होकर ही हम शक्तिशाली बनते हैं। इसी संगठित शक्ति के बल पर हम हिन्दू समाज व राष्ट्र के समस्त शत्रुओं को पराजित करने में सक्षम होंगे तथा **याची देही याची डोला** अर्थात् इसी शरीर या देह एवं इन्हीं आँखों से पुण्यभूमि भारत को परम वैभव के पथ पर चलते हुए विश्वगुरु के आसन पर विराजित होते हुए देख पाएँगे।

विजयादशमी पर्व पर शस्त्र पूजन की भी सनातन परंपरा है क्योंकि हमारी सनातन हिन्दू संस्कृति में यह मान्यता रही है कि जब-जब शास्त्र अर्थात् धर्म पर संकट आता है, तब-तब शस्त्र अर्थात् हथियारों के बल पर ही हम धर्म या शास्त्र की रक्षा कर सकते हैं। तभी तो भारतवर्ष की प्राचीन गुरूकुल शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों को शस्त्र एवं शास्त्र का समन्वित ज्ञान प्रदान किया जाता था। विजयादशमी उत्सव का संदेश है कि हमें दुर्जनों या शत्रुओं के सम्मुख झुकना नहीं है, आत्मसमर्पण नहीं करना है, शांति या अहिंसा का पाठ नहीं करना है बल्कि पूरी शक्ति एवं बल की सहायता से उन्हें पराजित कर समाज और राष्ट्र को संकट मुक्त करना है। प्रभु श्रीराम और राक्षस रावण का संघर्ष अच्छाई और बुराई, दैवीय शक्तियों और आसुरी शक्तियों का संघर्ष था - जो आज भी जारी है। हम देखते हैं कि अपराधियों तथा जिहादी आतंकवादी रूपी आसुरी शक्तियों द्वारा हमारे सनातन राष्ट्र एवं राष्ट्र की सज्जन शक्ति के विरूद्ध षड्यंत्र निरन्तर जारी है - जैसा हमें दिनांक नौ फरवरी 2016 को दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में दिखा - जब भारतीय संसद पर 2001 में हमला करने एवं 2013 में न्यायालयीन निर्णय से फांसी पर टांगे गए जिहादी आतंकी अफजल् गुरू की फांसी की बरसी मनाते हुए वामपंथी एवं जिहादी विद्यार्थियों ने नारा लगाया था - **भारत तेरे टुकड़े होंगे, इंशा अल्लाह, इंशा अल्लाह।** इसलिए आइए, इस विजयादशमी के पावन उत्सव के अवसर पर हम समस्त भारतवंशी प्रतिज्ञा करें कि हम राष्ट्र व समाज के सभी शत्रुओं से संघर्ष कर उन पर विजय प्राप्त करने का निरन्तर प्रयास कर अंत में अवश्य विजयी होंगे, क्योंकि - **तूफानों से डरकर नौका पार नहीं होती, कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।**

दशहरा से दिवाली

पल्लवी सिंह

हिंदू धर्म के दो बड़े त्यौहारों दशहरा और दीपावली में गहरा संबंध है, जो हमारी पौराणिक कथाओं और सांस्कृतिक परंपराओं में निहित है।

दशहरा (विजयादशमी) का आयोजन अश्विन (कुवार) मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को किया जाता है। इस त्यौहार की दो मान्यताएँ हैं। भगवान राम ने इसी दिन रावण का वध किया था, जो बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक माना जाता है। लोग इसी दिन रावण के पुतले को जलाते हैं और भगवान राम की जीत का उत्सव मनाते हैं। साथ ही इसी दिन देवी दुर्गा ने नौ रात्रियों एवं दस दिनों के युद्ध के उपरांत महिषासुर पर विजय प्राप्त की थी, इसलिए संपूर्ण भारतवर्ष में नवरात्रि का त्यौहार मनाया जाता है।नवरात्रि में माता के अलग-अलग रूपों की पूजा की जाती है तथा दसवें दिन दशहरा मनाया जाता है। इस दिन लोगों द्वारा रामलीला का आयोजन भी किया जाता है और अलग स्थानों पर मेले भी लगाए जाते हैं तथा दूसरी ओर माता दुर्गा की मूर्ति का विसर्जन किया जाता है। दशहरा के बाद शरद पूर्णिमा का पर्व आता है। ऐसी मान्यता है कि शरद पूर्णिमा के दिन ही चंद्रमा अपनी सोलह कलाओं से परिपूर्ण होता है। पूर्णिमा की रात चंद्रमा की रोशनी में खीर बनाकर रखते हैं तथा उसे सुबह बाँटते हैं। इसके पश्चात कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को करवा चौथ मनाया जाता है। इस दिन पत्नी, अपने पति की लंबी आयु के लिए निर्जला व्रत करती है। सर्वप्रथम माता गौरी ने महादेव के लिए यह व्रत किया था, जिसके बाद से यह व्रत हर पतिव्रता स्त्री अपने पति के लिए करती है। दशहरे के बीस दिनों के बाद दीपावली का त्यौहार मनाया जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार रावण का वध कर भगवान राम बीस दिनों की यात्रा कर कार्तिक मास की अमावस्या को अयोध्या पहुंचे, तब अयोध्यावासियों ने दीप जलाकर श्री रामजी का स्वागत किया, इसलिए यह त्यौहार मनाया जाता है। इसी दिन माता लक्ष्मी समुद्र मंथन से प्रकट हुई थीं, इसलिए हम दीपावली के दिन माता लक्ष्मी की पूजा करते हैं तथा साथ ही विघ्नहर्ता गणेशजी की पूजा भी करते हैं, क्योंकि कहा जाता है कि श्री गणेश बुद्धि के देवता हैं, तो जब तक हमारे अंदर ज्ञान नहीं होगा, हम धन का सदुपयोग नहीं कर सकते हैं।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

ढाई सौ वर्ष पुराना मंदिर पचहत्तर वर्षों से अधिक पुरानी परंपरा आज भी जारी

अमित राव पवार, देवास

वैसे तो भारत देश अपनी संस्कृति, सभ्यता, सांस्कृतिक विरासत और प्राचीन इतिहास के कारण विश्व मे अलग एक स्थान रखता है। भारत देश के साथ ही यहां के राज्यों जिलों, नगर, तहसील, ग्रामों का भी अपना एक इतिहास और पहचान है। इन्हीं में मध्यप्रदेश के मालवा के देवास जिले का एक छोटा सा गांव जिसकी वर्तमान आबादी छब्बीस सौ है व यहाँ पर चार सौ के करीब मकान होने के साथ ही जिला केंद्र से इस गांव की दूरी करीब 55 किलोमीटर है, यह **हाटपिपल्या तहसील का टप्पा सुकल्या गांव** है। यहां पर ढाई सौ वर्ष पुराना मंदिर व पचहत्तर वर्षों से अधिक पुरानी परंपरा आज भी जारी है। जो अपने आप में एक ऐतिहासिक महत्व की बात है। आसपास के बारह गाँवों को जोड़ने के कारण पुराने समय में इसे जागीरी वाला गांव कहा जाता था। लगभग ढाई सौ वर्ष पुराना यहां पर एक प्राचीन श्री राम मंदिर जिसका समय-समय पर गांव वालों एवं अन्य के माध्यम से जीर्णोद्धार होता आया आखरी बार जीर्णोद्धार सन 2016 में किया गया था।

सन् 1947 में भारत आजाद होने के दौरान जब संपूर्ण देश के हर कोने में उल्लास का माहौल था। तब यह टप्पा सुकल्या गांव कैसे जश्न मनाने से अछूता रहता। स्वतंत्रता प्राप्ति को उत्सव के रूप में मनाने एवं स्वतंत्रता प्राप्ति में बलिदान पुण्यात्माओं की शांति के उद्देश्य से आयोजन करने का मन सभी ग्रामवासियों में था। कुछ नया करते हुए उत्सव मनाने हेतु उस दौरान गाँव वालों को कुछ नया करने का विचार मन मे आया। ग्रामीण अनुसार तत्कालीन समय में गांव के ही जागीरदार श्री हिम्मत सिंह जी दरबार एवं अन्य वरिष्ठ लोगों ने **खड़ी सप्ताह** मनाने का निर्णय लिया, तब से आज तक मानो यह गांव की एक परंपरा बन गई। प्राचीन श्री राम मंदिर में आजादी स` लेकर आज तक समरसतापूर्ण **खड़ी सप्ताह** अर्थात सप्ताहभर दिन-रात नियमित रुप से भजन-कीर्तन का होना, यह धार्मिक आयोजन श्री गणेश चतुर्थी के दिन सुबह दस बजे आरंभ होकर, डोल ग्यारस की सुबह दस बजे समाप्त होता है जिसमें दो-दो घंटे गांव के सभी समाज का **पारा** (कालखंड) होता है जो लगातार भजन करता रहता है। यह सिलसिला 24 घंटे निरंतर चलता रहता है। सप्ताह समापन अवसर पर पूजन-हवन कर अंतिम दिन सुबह 7:00 बजे मंदिर प्रांगण में एक मटकी लगाकर समस्त गांव वालों की उपस्थिति में बोली लगाई जाती है जिसमें पुरुष, महिला हर वर्ग का व्यक्ति सम्मलित होता है जिससे कि इस कार्यक्रम का खर्च वहन हो सके। पूर्व के शुरुआती दौर में यह बोली एक रुपये, पांच रुपये तक सीमित हो जाती थी, वर्तमान में यह बोली दो लाख पार भी जा चुकी है। इन सात दिनों में पूरा गांव लाइट की जगमगाहट से नहाया हुआ प्रतीत होता है। रोज शाम के समय यहां अलग-अलग व्यंजनों को बनाकर अल्पाहार के रूप में वितरित किया जाता है जिसका आनन्द पूरा गांव लेता है। ये पूरी व्यवस्था ग्रामीणजन के सहयोग से होती है। आस-पास के गांव के लोग भी इस दौरान यहाँ दर्शन के लिए आते हैं तथा समापन डोल ग्यारस पर दोपहर करीब तीन बजे मंदिर से भगवान नरसिंह की पाषाण प्रतिमा लेकर एक भव्य शोभायात्रा के रूप में पूरे गांव में भ्रमण करते हुए गांव की नदी जिसे ग्रामीण श्री रामघाट के नाम से कहते हैं, पर प्रतिमा को तीन बार तैराया जाता है। इसी के आधार पर गांव के बड़े-बुजुर्ग आने वाले वर्षभर सुखमय या कष्टमय होंगे की भविष्यवाणी अथवा पूर्वाग्रह करते हैं। यह परंपरा 75 वर्ष पुरानी मानी जाती है, जो आज भी अपनी पूर्व परंपरा एवं मूल स्वरूप में चल रही है। इस पूरे आयोजन को लेकर गांव के लोगों द्वारा 10-12 दिनों पूर्व से ही तैयारी शुरू कर दी जाती है। आज पूरा देश जहाँ आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है वहीं यह गांव अपने देश के प्रति उत्सव बनाने की परंपरा को आज भी जारी रखे हुए है।

मालवा और निमाड का दशहरा

नौ दिनों तक चलने वाले, शक्ति पर्व के बाद में दशहरे का आगमन होता है। यह पर्व शक्ति की पूजा के बाद, आसुरी वृत्तियों पर विजय का संकेत करता है। हम सभी हिंदुओं के लिए दशहरे का पर्व बहु प्रतीक्षित होता है। इस दिन भगवान श्री रामचंद्र जी ने रावण का वध करके लोक कल्याण का कार्य किया था। इसी इतिहास की स्मृति में और भगवान राम के कृतित्व को चिरस्थाई रखने के लिए, हम सभी प्रतिवर्ष दशहरा मनाते हैं। हमारे मालवा और निमो में भी दशहरे के पर्व का अलग ही उल्लास होता है। ग्राम नगर में निवास करने वाले बच्चे और बूढ़े, स्त्री और पुरुष सभी, दशहरे को बड़े उल्लास और उत्साह के साथ मनाते हैं। माता बहनें घर के आंगन को सुंदर रंगोली से सजाती हैं। घर में मिष्ठान बनाए जाते हैं।

प्रातः काल के भोजन इत्यादि से निवृत होने के बाद, माता बहने घर में दशहरे का माँडना बनाती हैं। इस मांडने मे युद्ध का अंकन होता है। सूरज और चांद बनाए जाते हैं। चारों तरफ बनाया परकोटा, किले को दर्शाता है। मांडने की सीमा रेखा पर गोबर की बनाई हुई 10 टिकियाएं रखी जाती हैं। इन टिकियाओं पर गिलकी के फूल लगा दिए जाते हैं।

दोपहर होते ही दशहरे का उल्लास दोगुना और चौगुना हो जाता है। परिवार के सभी सदस्य नए वस्त्र पहनते हैं। कहीं तो गांव में दोपहर के बाद ढोल बजाकर दशहरा जीतने के लिए चलने की सूचना भी दी जाती है। मांडने के एक और खड़े होकर माता बहनें, पुरुष वर्ग की आरती उतार कर तिलक करती हैं। उन्हें गुड़ और गिलकी का प्रसाद दिया जाता है। यह दशहरा विजय करने अर्थात युद्ध जीतने की शुभकामना स्वरूप होता है। इसके पश्चात सभी लोग मांडने को प्रणाम कर के नियत मैदान में जाते हैं, जहां रावण का दहन किया जाता है। यह भगवान श्रीराम द्वारा, रावण के वध की याद दिलाता है। रावण दहन करने के बाद सभी लोग एक दूसरे को शुभकामनाएं देते हुए, गले मिलते हैं। जब सब लोग वापस लौटते हैं तो वे अस्तरे की पत्तियां और ज्वार के पौधे का डंठल (तना) लेकर आते हैं। अपनी भारतीय परंपरा को निभाते हुए, सभी लोग अपने गांव में घर-घर जाते हैं और वहां बड़ों के चरण स्पर्श करते हैं। यहां पत्तियों रूपी सोने चांदी का आदान-प्रदान भी होता है, जो एक दूसरे के प्रति स्नेह और समरसता के भाव को बढ़ाता है। हर घर में अपने घर आने वाले अतिथियों के स्वागत की व्यवस्था होती है ।

सभी समाजजन एक दूसरे के साथ मिलते हैं । सभी लोग हर्ष और उल्लास के क्षण व्यतीत करते हैं। हमारे त्यौहारों की सुंदरता यही है कि ये त्यौहार हम सभी को, आपस में स्नेह के सूत्र में बांधकर रखते हैं।

मालवी केवात

बाबुलाल हम्मड़, रिंगनोद

मालवी भाषा अपनी देशी भाषा है। मालवी भाषा मीठी भाषा है। मालवी भाषा में घणी हारी केवात है। वणमें से थोडी के वात अपनी किताब अणी जागृत मालवा में लिखी रया हां । के सी लागे वतावजो, ने थमाने कोई के वात आवे तो मने वतावजो।

कलजुग में कई कई वेगा वनी के वात है

1.कलजुग आयो रे केशवा ने कलजुग ने देख ने मने आवे धोको, बाप भरे ने बेटो पिवे हुक्को।

अर्थ - कलयूग में पिताजी और बेटा एक साथ नशा करते हैं। यानी संस्कार की कमी को बताने का प्रयास किया है। आधुनिकता की दौड़ में हम अपने संस्कारों को भूल रहे हैं ।

2.कलजुग आयो रे केशवा ने कलजुग ने देख ने सब डरे, रोगार पिने मरे वनो डाक्टर भी कई करे।

अर्थ - जहर पी कर मरने वाले को डॉक्टर भी नहीं बचा सकता है। जो खुद ही संकट को बुलावा दे उसे भला कौन बचा सकता है।

3.कलजुग आयो रे केशवा हामे आई खाली, बेन भाणेज रहीगा ने ओनो ओढी गी हाली।

अर्थ - कलजुग का लक्षणों में कहा गया है कि इस युग में बहन और भाणजी से अधिक ससुराल और साली को मान दिया जाता है।

4.निम्बू तोडे ने कोलो पैदा वहीजा

अर्थ - छोटी समस्या ठीक नहीं होती है और बडी पैदा हो जाती है । समस्या ग्रस्त आदमी को और समस्याएं घेर लेती हैं।

5.हिया में ने हुंजे तो किया कई हूंजे।

अर्थ - जब कोई बात मन में ही नहीं आती है तो वह कर्म में भला कब उतरेगी। **सगरा जन के राम राम**

नवराता – मातामाय नऽ को पवित्तर तेवार

दुर्गेश कुमार साध

निमाड़ मऽ दोई प्रकार की नवरात नऽ को बराब्बर महत्व छे। ई वात अलादी छे कि अपणा यॉं चैत वाळई मातामाय ज्यादा पूजायज, नऽ ज्यादा मनावज। रथ बउड़ाउणुँ, मातामाय की सेवा करनुँ, वाड़ी नऽ मऽ जवारा नऽ खऽ पूजणुँ, ई सब निमाड़ की विसेसता छे। निमाड़ खऽ तो **'गणगौर'** का नाम सी पइचाण्यो बी जाएज। निमाड़, मातामाय की दूसरी मिजवानी अश्विन महीना मऽ करज। एखऽ **'शारदीय नवरात्रि'** बी कयेज। बुड़ाहाड़ा कयेज, नऽ शास्त्रोक्त वात बी छे कि मातामाय साल मऽ दुई बखत धरती पर नौ-नौ दिन का लेणऽ आवज। मातामाय तो अपण सबकी माय छे, उनख सब मालम छे, पण उनका साथ अपण खऽ रयण को मोको तो साल मऽ सिरप दुईज बार मिलज। मातामाय को तेवार एकमात्र ऊ तेवार छे, जेम नाना-नाना लेकरु सी लई कऽ नऽ, बुड़ाहाड़ा सबई जण अपणा हिसाब सी मातामाज का लेण तप करज। कोई निराहार उपास करज, कोई एक टेम को करज, कोई बिना अन्न को करज, कोई फरियाळ का साथ करज, नऽ कोई-कोई तो सिरप पाणी पऽ नऊ दिन रयज। कोई नऊ दिन तक चप्पल नी पयेरतो, तो कोई रोज सुबह पैदल मंदिर मऽ जायज। कईण को मतलब यो छे कि ईना तेवार खऽ हर आदमी मातामाय का लेणऽ कई-न-कई कठिण काम करजज। तप सी शारीरिक लाभ मिलज, मानसिक सांति बी मिलजज, पण अध्यात्मिक रुप सी बी बड़ो बल मिलज। ईना नऊ दिन बड़ा सौभाग्य सी मिलज, जेका सी इनको बराब्बर सदुपयोग सबई नऽ खऽ करनुं जाइजे। कारण कि अगर यो जीवन मरुस्थल छे, तो नवरात नऽ सावण की सेरी छे। माय तो अपणा बाळक नऽ को खूब ध्यान रखज, तो बाळक नऽ को भी तो फरज छे कि मातामाय की सेवा करऽ। मातामाय की पूजा-पाठ खऽ लई कऽ नऽ नियम-कायदा नऽ को बी ध्यान रखणुँ चाइजे। जेतरी सफई भायर की होणुँ जाइजे, ओतरीज मन की स्वच्छता भी होणुँ चाइजे। व्यसन, मनोविकार, जळण, हेवो, इन्नऽ नऽ सी दूर रई नऽ केवल मातामाय मऽ ध्यान लगाउणुँ चाइजे। मातामाय खूब लाड़ भी करज, नऽ गलती होण पऽ दण्ड देण मऽ बी नी हिचकती। जेका सी तो जमऽ-जमऽ धरती पऽ तमोगुण (नकारात्मकता) बढ्यो, दानव नऽ नऽ अपणी सीमा नऽ लॉंघी, जमऽ देवता भी उनका आग लाचार हुई गया, तो सबई नऽ नऽ सिरप मातामाय खऽ जऽ पुकार्यो। मातामाय नऽ एक माय का रूप मऽ, असा उद्दण्ड दानव नऽ खऽ उचित दण्ड बी दियो। अगर तमारो आचरण सुद्ध छे, तमारा मन मऽ विकार नी हँई, तो मातामाय तमारा लेणऽ ममतामई जऽ रहेसे, पण मातृशक्ति का प्रति तमारा मन मऽ कदी निरादर छे, अपमान छे, तो फिरी मातामाय का दरबार मऽ ओको उचित न्याय मिलसेज। आज समाज मऽ मातृशक्ति का प्रति

जेतरी बुरी खबर नऽ आवज, ओका पाछऽ सिरप एकज कारण छे कि अपण मातामाय खऽ भूली गयाज। जी मातामाय, मूर्ति का भीत्तर छे, उनीज मातामाय सबई मातृशक्ति का भीत्तर छे, ईनो भान हमनऽ नऽ खऽ रयणुँ जाइजे। वैज्ञानिकता की वात करॉं, तो अपणा सबई तेवार प्रकृति अनऽ समाज सी जुड़ेलज छे। बरसात का मौसम मऽ, उमस मऽ विषाणु-रोगाणु घर का कोना-कोना नऽ मऽ बठी जायज। नवरात नऽ सी सफई जो सुरु होएज, तो फिरी दीवाळई तक चलज। एका अलावा नवरात नऽ को एक विसेस महत्व एकालेण छे कि ईना समय मऽ सबई लोग अपणी कुलदेवी खऽ पूजज। कारण कि कुलदेवी छे, तो तमारो कुल जीवित छे। तमारो नऽ तमारा परिवार को अेखो अस्तित्व कुलदेवी की किरपा सी जऽ छे। साल भर मऽ कम-सी-कम दुई बखत तो कुलदेवी का दरबार मऽ हाजरी देणुंज चाइजे। लोग कुलदेवी खऽ पुजणऽ दूर-दूर तक अपणी जड़ नऽ तक पहुँचज, इना बहानऽ ऊ अपणा समाज, अपणा लोग नऽ सी बी जुड़ेल रहेज। तो तम सब लोग नवराता नऽ मऽ अपणा सबई कलुष धोई नाखजो, एतरोज ध्यान राखजो। जय माताजी।

म्हारी माता आई घर पावणी

श्रीमती मंजुला शर्मा, सेंधवा

म्हारी माता आई घर पावणी ,
आज याणी लग या सुहावणी ।
गोबर माटी से घर आँगण लिपाया ,
कुंकुं हळद से चार सात्या पुराया ।
रंगोळी से आंगणा सजावणी
म्हारी माता आई घर पावणी ।

नव दिन नव नव रूप मऽ आई ,
अमर सुहाग को आसीस लाई
मझघर मऽ पाटला बठाड़णी ,
म्हारी माता आई घर पावणी ।

नख छोल्या चोखा को हंडो चढ़ाओ,
घी अरु गुड़ से थाळ भरायो ,
मीठा सीरा को भोग लगाड़णी ,
म्हारी माता आई घर पावणी ।

भर भर कुंकुं कपाळ भराओ ,
नाकऽ मऽ नाथ नऽ पोत पेराओ ,
लाल हरो लुगड़ो ओढ़ावणी ,
म्हारी माता आई घर पावणी ।

हाथ जोड़ी माता अरज करा हम ,
बारई मईना थारा साथ रवां हम ,
म्हारा माथा पऽ धर थारो हाथ णी ।
म्हारी माता आई घर पावणी ।

संस्कार वर्ग पहेली...!

बांये से दाये

1. भगवान विष्णु का एक नाम (4) 4. मालवा क्षेत्र का एक तीर्थ स्थान, परशुराम जी की जन्मस्थली (4) 7. माँ सरस्वती का वाद्य (2)
8. भगवान कृष्ण के मुस्लिम भक्त कवी (4) 9. पूल (2)
12. जगत के लिए यह विशेषण उपयोग किया जाता है। (4)
14. मिथिला के राजा (3) 15. नमस्कार, प्रणाम, झुकना (3)
16. सही, इंसाफ (2) 18. दिनकर, भास्कर (2)
20. बड़ा (2) 22. इंद्रजीत का छोटा भाई/रावण का पुत्र (6)
24. बाल्यकाल में भगवान श्री कृष्ण का पवित्र नृत्य (2)

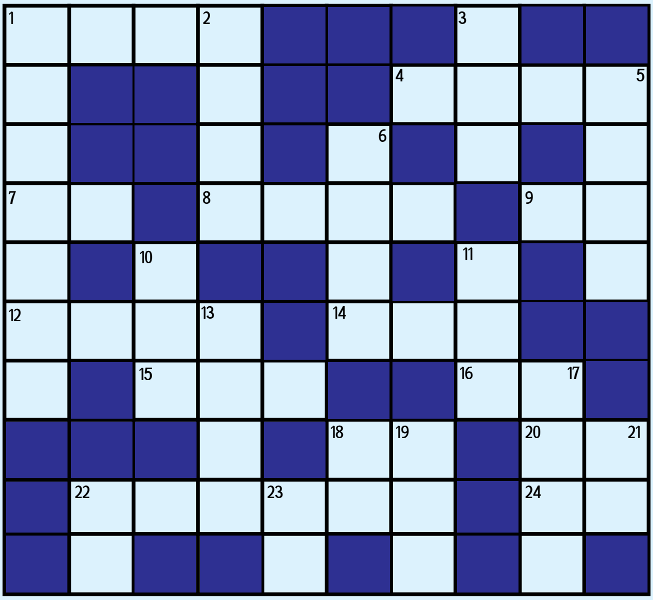

उपर से नीचे

1. अदम्य वीरता के लिए सैनिकों को दिये जाने वाल सम्मान (7)
2. मोहिनी रूप लेकर भगवान विष्णु से इस राक्षस को मारा था (4)
3. भगवान शंकर का त्रिशुल (3) 5. भगवान गणेश का एक नाम (4)
6. हाथ से बजाए जाने वाला एक वाद्य (2) 10. शपथ, कथन (3)
11. सुलक्षिणा पुत्री, एक योजना (3) 13. मनभावन, घूमने योग्य (4)
17. धर्मराज (4) 18. माता लक्ष्मी का एम नाम (2)
19. साहस (3) 21. विनोद, हंसी (2)
22. माँ दुर्गा का एक नाम (2) 23. कुटुंब (2)

(उत्तर अगले अंक में)

कल बहुत देर हो जाएगी.....

पीयूष शर्मा

श्राद्ध पक्ष के समाप्त होते ही, नवरात्रि का पावन पर्व प्रारंभ हो जाएगा। नवरात्रि मे हिंदू समाज आद्य शक्ति माँ जगदम्बे की आराधना करते हैं। शास्त्रोक्त पूजा विधान के अतिरिक्त माँ दुर्गा की आराधना गरबा नृत्य द्वारा भी की जाति है। मूलतः यह नृत्य परंपरा गुजरात से प्रारंभ हुई, किन्तु आज समूचे देश मे नवरात्रि के दौरान, गरबा नृत्य किया जाता है। गरबा शब्द की व्युत्पत्ति **गर्भ** शब्द से हुई है। वस्तुतः गरबा नृत्य, गर्भ के रूप मे मातृ शक्ति का ही पूजन है। गरबा करने से पूर्व पांडाल मे एक मटकी रखी जाती है, जिसे जिसे गरबी कहते हैं। गरबी वास्तव मे **गर्भ** का ही संकेत होता है। गरबी मे एक दीपक रखा जाता है, जो गर्भ के माध्यम से जन्म लेने वाली आत्मा को संकेत करता है। प्राचीन समय मे, माता के रूप मे स्त्री के प्रति अपनी कृतज्ञता अर्पित करने के लिए, पुरुष वर्ग इस गरबी के चारों ओर घूमते हुए गरबा नृत्य किया करते थे। धीरे धीरे इसमे महिलाओं ने भी सम्मिलित होना प्रारंभ किया और इस प्रकार नवरात्रि का यह शास्त्रीय पर्व लोकरंग से भी सराबोर हो गया।

स्त्री विमर्श के मौलिक भारतीय चिंतन को समझना हो, तो नवरात्रि का यह उत्सव सटीक उदाहरण बन सकता है जिसमे पुरुष समाज, संपूर्ण मातृ शक्ति के प्रति अपनी कृतज्ञता और सम्मान व्यक्त करता है। चूंकि इस पर्व के साथ नृत्य और संगीत जुड़ा था, इसलिए यह अत्यंत प्रचलित हुआ। समय के साथ इस पर्व को मनाने के तौर तरीकों मे भी बदलाव आया। माँ दुर्गा के शास्त्रोक्त पूजन का भाग छोटा हुआ और गरबा, पर्व के केंद्र मे आ गया। आज गरबा नृत्य के लिए बड़े-बड़े पांडाल सजाए जाते हैं। गरबा करने के लिए बहन बेटियाँ, कई दिनों पूर्व से ही तैयारियां करने लगती हैं। भारतीय परिधानों मे हिंदू युवतियाँ जब सज संवर कर गरबा करती हैं तो संपूर्ण वातावरण गरबों की मधुरता से भर जाता है।

भारत उत्सवों का देश है, और हम भारतीय अपने त्योहारों को इसी हर्ष और उल्लास के साथ मनाते हैं। यही हमारी संस्कृति की सुंदरता भी है। किन्तु यहीं पर हमे सावधानी रखने की भी आवश्यकता है। स्वतंत्रता और स्वच्छंदता मे एक बारीक सा अंतर होता है। यदि इस अंतर का अतिक्रमण हो जाए तो मर्यादा के प्रश्न खड़े हो जाते हैं। कमोबेश हमारे नवरात्रि पर्व के साथ भी कहीं कहीं ऐसा हो रहा है। यह संपूर्ण हिंदू समाज के लिए चिंता का विषय है।

गरबा के पांडाल, आराधना स्थल के बजाय मनोरंजन का स्थान बनते जा रहे हैं। जहां मातृशक्ति की पूजा होनी चाहिए, वह स्थान युवक-युवतियों के मिलने का अवसर बन जाता है। शहरों मे ऐसे प्रायोजित गरबा मण्डल आम हो चले हैं। शालीन भारतीय परिधानों के स्थान पर, अशोभनीय वस्त्रों मे भी युवक-युवतियाँ देखे जा सकते हैं। गरबा नृत्य के मधुर संगीत का स्थान फूहड़ और फिल्मी गीत ले रहे हैं । कई स्थानों पर युवक-युवतियों को, जगन्माता की मूरत के सामने ही फिल्मी गीतों पर थिरकते हुए देखा जा सकता है।

स्पष्ट रूप से यह हमारे सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास ही है। अपनी सर्वोत्तम परंपराओं का ऐसा विकृतिकरण, हिंदू समाज के लिए अत्यंत चिंतनीय है। इन वृत्तियों पर रोक लगाने का दायित्व सामूहिक रूप से हम सभी का है। यदि यह जागरण हम लोग आज नहीं कर पाए तो कल बहुत देर हो जाएगी।

बुरहानपुर मे ट्रेन जेहाद

देश जेहाद के एक नए चेहरे को देख रहा है। देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती देने वाली, भारतीय रेल अब जेहादियों के निशाने पर है। भारतीय रेल को निशाना बना कर रेलगाड़ी को पलटने का आव्हान पाकिस्तान के एक मौलवी ने भी किया था। इसके बाद से ही रेलगाड़ियों को पटरी से उलटाने के कई प्रयास किए गए हैं। कहीं पर भारी लोहे का सामान पटरी पर रख दिया गया तो कहीं गैस का सिलिन्डर ही रखा पाया गया। इससे यह साफ हो जाता है कि यह मुस्लिम आतंकवादियों की योजनाबद्ध कार्यवाही है।

इसी क्रम मे मध्यप्रदेश का बुरहानपुर मे भी ट्रेन रेल जेहाद की घटना को अंजाम दिया गया। यहाँ तो भारतीय सेना को ही निशाना बनाया गया। सेना के जवानों को लेकर जा रही एक स्पेशल ट्रेन को धमाका करके पलटने की योजना थी। इसमे इसमें सेना के अधिकारी, जवान यात्रा कर रहे थे साथ ही रेलगाेी मे हथियार भी रखे हुए थे। रेलगाड़ी उलटाने के, लिए नेपानगर में रेलवे ट्रैक पर डेटोनेटर बिछा दिए गए थे। सौभाग्य की बात यह रही की ट्रेन के पहुँचने से पहले ही, कुछ डेटोनेटर फूट गए और रेलवे के अधिकारी सतर्क हो गए। लोको पायलट ने, विस्फोट की आवाज सुनी और उसने तुरंत ट्रेन रोक दी। इस प्रकार एक बढ़ी दुर्घटना होने से टल गई।

इस प्रकरण में साबिर नामक व्यक्ति को गिरफ्तार भी कर लिया गया है। साफ है की जेहादी, अपने कई अलग अलग चेहरों के साथ देश मे तबाही मचाने के मंसूबे बना रहे हैं। हमारा मालवा भी इनसे अछूता नहीं है।

सुपोषित भारत, समर्थ भारत - राष्ट्रीय सेवा भारती की सार्थक पहल

सुपोषण की महत्ता और आवश्यकता को समझते हुए राष्ट्रीय सेवा भारती ने राष्ट्रीय स्तर पर 1 से 30 सितम्बर 2024 तक सुपोषण सप्ताह मनाना निश्चित किया है। **सुपोषण जागरूकता अभियान** के माध्यम से सेवाभारती, इन्दौर महानगर में दिनाँक 22 से 29 सितम्बर 2024 तक सुपोषण सप्ताह मनाएगी। इस अभियान में 353 सेवा बस्तियों के साथ सर्व समाज की सहभागिता रहेगी। इस अभियान का प्रारंभ, अखिल भारतीय सेवा प्रमुख (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) श्री पराग जी अभ्यंकर की अध्यक्षता में गुरूवार, दिनाँक 19 सितम्बर को राजवाड़ा पर संपन्न हुआ। इस अवसर पर इस कार्यक्रम हेतु बनाए गए कई पोस्टरों का विमोचन किया गया तथा विभिन्न बस्तियों से आए जनसमुदाय के साथ-साथ, संपूर्ण समाज ने मिलकर 1 किलोमीटर से अधिक लंबी **मानव श्रृंखला** का निर्माण भी किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री पराग जी ने सुपोषण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, हमारी प्राचीन भोज्य प्रणाली की वैज्ञानिकता का प्रतिपादन किया और हुए आज की पीढ़ी को उसका अनुसरण करने का आव्हान किया।

कार्यक्रम में माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, जिला धार से श्रीमती सावित्री जी ठाकुर मुख्य अतिथि रहीं। उन्होंने कहा कि स्वस्थ शरीर-मन-बुद्धि के साथ संपूर्ण समाज को आगे ले जाने के विचार के लिए सेवा भारती प्रशंसनीय है। कार्यक्रम का समापन मुंय अतिथि श्रीमती सावित्री जी द्वारा माता अहिल्याबाई की मूर्ति पर माल्यार्पण के साथ किया गया।

मध्यप्रदेश - जेहादी उपद्रव

वैसे तो पूरे देश से गणेशोत्सव की शोभायात्राओं पर पत्थरबाजी के समाचार आए हैं। मध्यप्रदेश भी इससे अछूता नहीं रहा। श्री गणेश उत्सव को मनाते हिंदुओं को, जेहादी पत्थरबाजों ने अपना निशाना बनाया। पत्थर मार कर भाग जाना, छुप कर पत्थर मारना या नाबालिगों के द्वारा पत्थरबाजी करवाना, हमले का सबसे सुरक्षित प्रकार कहा जा सकता है। इसीलिए कश्मीर में भी आतंकवादी समूह इसी हथियार का उपयोग, सेना के विरुद्ध करते थे। अब यही योजना हिंदुओं के विरुद्ध काम मे लाई जा रही है।

रतलाम के मोचीपुरा में भगवान गणेश की शोभायात्रा पर पथराव किया गया और फिलिस्तीन के झंडे भी लहराए गए। रतलाम के ही खटीक मुहल्ले की ओर जाती हुई शोभायात्रा को भी रोकने का प्रयास किया गया। यहाँ पुलिस का भी नकारात्मक रवैया देखा गया। बर्बरतापूर्वक लाठीचार्ज में जनजाति समाज के एक हिंदू युवक को अपने प्राण गँवाने पे।

मंदसौर में ईद के जुलूस में शामिल मुस्लिम युवकों ने मंदिर के सामने अभद्रता की और जूते पहन कर मंदिर पर चढ़ गए। मुस्लिम भीड़ के द्वारा पत्थर भी फेंके गए, जिससे मंदिर के पुजारी एवं एक अन्य युवक घायल हो गये। यहाँ मुस्लिम दंगाइयों ने पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे भी लगाए। मुस्लिम दंगाइयों ने श्योपुर, मंडला, रायसेन, बालाघाट में भी बवाल काटा। **सर तन से जुदा** के नारे लगाए गए, हिंदुओं के घरों में सुतली बम फेंके गए।

साफ है कि देश में सभी दूर एक जैसा घटनाक्रम, एक साथ घटा। ये घटनाएं यह बताने के लिए पर्याप्त हैं, कि यह संयोग नहीं बल्कि योजनाबद्ध तरीके से हिंदुओं के विरुद्ध किया जा रहा, जेहाद ही है।

शुभ
दीपावली
जाग्रत मालवा के सभी पाठक बन्धु - भगिनियों को
दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

नवम्बर माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. 02 अन्नकूट, गोवधर्न पूजा
ता. 12 देवउठनी ग्यारस
ता. 15 भ. बिरसा मुंडा, जनजाति गौरव दिवस
ता. 22 वीर दुर्गादास राठौर पुण्यतिथि
ता. 23 काल भैरवाष्टमी
ता. 30 श्राद्ध अमावस्या

बुक-पोस्ट
जाग्रत मालवा
प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11डी, पोलोग्राउण्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं अर्चना भवन, 76 रामबाग, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731-3551341